International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 15-04-2021, Accepted: 02-05-2021, Published: 17-05-2021
Volume 3, Issue 2, 2021, Page No. 28-31

शकुंतिका उपन्यास में युगबोध और जनवादी चेतना

डॉ. विद्या शशिशेखर शिंदे
असोसिएट प्रोफेसर, आय. सी. एस. कॉलेज, खेड, रत्नागिरी, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
एक मानवीय इकाई के रुप में सभ्यता एवं संस्कृति के सर्वांगीण विकास में स्त्रियों की भागीदारी हमेशा से महत्वपूर्ण रही हैं। परिवार और समाज में सहभागिता के अतिरिक्त वह निर्विवाद रुप से पुरुषों के आकर्षण का केंद्र भी रही हैं–भावनात्मक और शारीरिक रुप से भी।ज्यों ज्यों सभ्यता का विकास होता हैं स्थितियॉं क्रमशः बदलती हैं। जाहिर है बदलते हालात में स्त्री–पुरुष के बीच का परस्पर संबध स्वाभाविक रुप से बदला है और बिगडा भी हैं। स्त्री का परिवार में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाने के बावजूद उसकी स्थिति महत्वपूर्ण नहीं मानी नही जाती। मानवीय इकाई के रुप में स्त्री और पुरुष का समान महत्व है, यह सैद्वांतिक रुप से सच होते हुए भी व्यावहारिक रुप से झूठ लगता हैं। स्त्री अस्मिता को लेकर बाहरी और भीतरी मोर्चे का अंतःसंघर्ष लंबे अरसे तक चला और सामाजिक साहित्यिक विमर्श का एक स्वाभाविक एवं खास हिस्सा बन गया। यही कारण है कि समकालीन हिन्दी साहित्य की केंद्रिय संवेदना के रुप में स्त्री चेतना एवं संघर्ष के कई रुप में स्त्री लगभग आधी आबादी है इसलिए उसका कोई सपना और संधर्ष एकांगी और निरर्थक नहीं हो सकता।संधर्षधर्मी चेतना से बनते बिगडै मूल्य ओर हाशिए से मुख्य धारा में आने का संघर्ष समकालीन उपन्यासों में से 'शंकुतिका' इस भगवानदास मोरवालजी के उपन्यास में स्पष्ट रुप में प्रतिबिंबित हुआ हैं। स्त्रियों के भीतर चेतावनी जगाकर उन्हें नये युग में किस तरह आगे बढना है उसकी प्रेरणा देता हैं।

मुख्य शब्दः युगबोध और जनवादी चेतना, सभ्यता एवं संस्कृति

प्रस्तावना
वैसे ही स्त्री ही स्त्री की दुश्मन बनी हुई हैं क्योंकि आज तक समाज में सास–बहू के झगडे भेददृष्टी के कारण ही होते हैं। भारतीयं समाज में लडकियों को लडकों की तरह सुविधा नही मिलती है न घूमने फिरने की आजादी। उसकी तरफ उपेक्षा की दृष्टी से देखा जाता है।इस उपन्यास में स्त्री की इस मानसिकता में परिवर्तन लाकर समाज के सामने एक नया आदर्श रखा गया है।लडकी को जन्म से पराया धन कहकर उसे अभागन कहनेवाली सबसे पहले उसकी मॉं ही होती है। अगर मॉं की इस भेददृष्टी में परिवर्तन आ जाय तो शायद एक स्त्री दूसरे स्त्री का सम्मान करने लगेगी। हमारे समाज में जो अनेक परंपराऍं बनायी गयी है जो स्त्री को हमेशा उपेक्षित रखती है ऐसी परंपराओं को छेद देकर नयी संभावनाओं को उजागर करने का साहस इस उपन्यास के माध्यम से किया गया हैं।
आधुनिक काल में साहित्य के माध्यम से सिर्फ स्त्री के उपर होनेंवाले अत्याचार दिखाकर उसे और उपेक्षित करने अपने के बजाय स्त्री अपने भीतर परिवर्तन कैसे कर सकती है इसका वास्तववादी चित्रण इस उपन्यास के माध्यम से किया गया हैं। उपन्यास के आरंभ में स्त्री का परंपरागत रुप चित्रित करके अनुभव के आधारपर धीरे धीरे लडकियों के बारे में पुराने दकियानुसी विचार हटकर नये मूल्यों का आरंभ परिवार के भीतर से होता हुआ दिखाई देता हैं। नये विचार एकदम नहीं आ सकते उसके लिए समय देना होगा। दुर्गा जैसी सकारात्मक सोच रखनेवाली एकाद स्त्री भी अपने अनुभव के आधारपर अपने आसपास के लोगों के मन के भीतर लडकियों के प्रति सम्मान की भावना निर्माण कर सकती है। समय की नजाकत को समझकर हमें आगे बढना होगा।

शोध कार्य का उदे्श्य
1. भारतीय संस्कृति पुरुषप्रधान संस्कृति होने के कारण परिवार में स्त्री को हीन माना जाता है इस परंपरा में परिवर्तन लाने का प्रयास उपन्यास में किस तरह से किया है यह दर्शाना है।
2. स्त्री–पुरुष भेदाभेद को मन से दूर करने के लिए सामाजिक परिवर्तन की जरुरत दिखाकर उसमें समय की नजाकत को पहचानना इस संकेत को उपन्यास के माध्यम से परिचित करना है।
3. स्त्री शिक्षा के माध्यम से स्त्री सबलता का संकेत देकर जागरुकता लाने का संकेत इस उपन्यास के माध्यम से किसतरह से किया है वह दिखाकर समाज में संवेदना जागृत करना है।

'शंकुतिका' उपन्यास का अनुशीलन
एक मानवीय इकाई के रुप में सभ्यता एवं संस्कृति के सर्वांगीण विकास में स्त्रियों की भागीदारी हमेशा से महत्वपूर्ण रही हैं। परिवार और समाज में सहभागिता के अतिरिक्त वह निर्विवाद रुप से पुरुषों के आकर्षण का केंद्र भी रही है–भावनात्मक और शारीरिक रुप से भी।जाहिर है बदलते हालात में स्त्री पुरुष के बीच का पारस्पारिक संबध स्वाभाविक रुप से बदला है और बिगडा भी है।स्त्री परिवार में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाने के बावजूद उसकी स्थिति महत्वपूर्ण नहीं मानी जाती। पितृसत्ताक व्यवस्था के अधीन वह दोहरे किस्म की नागरिक बनी रही। मानवीय इकाई के रुप में स्त्री और पुरुष का समान महत्व है,यह सैद्वांतिक रुप से सच होते हुए भी व्यावहारिक रुप से झूठ लगता है।स्त्री अस्मिता को लेकर बाहरी और भीतरी मोर्चे का अंतःसंघर्ष लंबे अरसे तक चला और सामाजिक,साहित्यिक विमर्श का एक स्वाभाविक एवं खास हिस्सा बन गया। यही कारण है कि समकालीन हिन्दी साहित्य की केंद्रिंय संवेदना के रुप में स्त्री–चेतना एवं संधर्ष के कई रुप और ढंग दिखते है।एक मानवीय इकाई के रुप में स्त्री की लगभग आदी आबादी है इसलिए उसका कोई सपना और संधर्ष एकांगी और निरर्थक नही हो सकता। संधर्षधर्मी चेतना से बनते बिगडते मूल्य और हाशिए से मुख्य धारा में आने का संधर्ष समकालीन उपन्यासों में से 'शकुंतिका' इस भगवानदास मोरवालजी के उपन्यास में स्पष्ट रुप में व्यक्त होता हैं।

यह उपन्यास समाजवादी यथार्थवाद को व्यक्त जरुर करता है मगर उससें निकलनेवाली समस्याओं का समाधान ढूँढकर पाठकों के सामने रखता है। समाजवादी यथार्थवाद मनुष्य के उदात्त जीवन मूल्यों के प्रति आस्था रखता हैं। वह जीवन में जो कुछ श्रेष्ठ और सुंदर है,उसे मानवता का प्रतिक समझता है।मनुष्य उन जीवन मूल्यों प्राप्त करने का श्रम करें, इस हेतू प्रोत्साहित करता है।

वास्तव में समाजवादी यथार्थवाद एक दृष्टीकोन है जिससे जीवन तथा जगत् को परखा तथा चित्रित किया जाता है। भगवानदासजी का 'शकुंतिका' उपन्यास स्त्री की पारिवारिक स्थिति को दर्शाता है। लेकिन स्त्री के प्रति परंपरागत दृष्टीकोन दिखाकर उसमें परिवर्तनरुपी सामाजिक चेतना की क्रांति दिखाकर वह समाज को सचेत करना चाहते है। अपने विचारों को प्रस्तृत करने की लेखक की अपनी एक संतुलित दृष्टी है जो उपन्यास की मार्मिकता को स्पप्ट करती है। इस उपन्यास में नारी के पात्र दृढ निश्चयी और नई चेतना से युक्त है। पढी और सुनी हुई दुनिया पर उनका भरोसा नहीं है। वे देखी हुई दुनिया के लेखक है। इसलिए उपन्यास के सभी चरित्र बेहद प्रामाणिक है।

उपन्यास का देशकाल तथा वातावरण

'शंकुतिका'यह उपन्यास आधुनिक काल की शहरी सभ्यता में विचरण करनेवाले दो पडोसियों के बीच का वातावरण व्यक्त करता है। आज सुशिक्षित,सुसंस्कृत, सभ्य कहनेवाले शहरी लोग भी परंपरागत दृष्टीकोन को अपनाते है।जिनके घरों में लडके पैदा होते है वहॉ जश्न मनाया जाता है ओर लडकियॉ पैदा होने पर मातम मनाया जाता है।इतना ही नही तो कई माताएँ लडकी का जन्म होते ही उसे लावारिस की तरह फेंक देती हैं।कोई मानवतावादी उसे उठाकर अनाथाश्रम में पहुँचा देते है। विज्ञान की गर्भजल परीक्षा का उपयोग लिंग पहचाने के लिए किया जा रहा है। अगर तीन मास का गर्भ होने से पहले गर्भ लडकी का है यह पता चलने पर उसे गर्भ में मार देना यह शहरी संस्कृति की परंपरा बनने लगी।उसी का वर्णन इस उपन्यास में किया है। साथ साथ गर्भजल परीक्षा पर लायी गयी बंदी का भी वर्णन किया है।कन्या भ्रुण हत्या कानूनन जुर्म होने के बाद भी धन के लालच में कुछ लोग यह घिनौना कृत्य आज भी कर रहे है इसकी ओर लेखक ने संकेत किया है।परिवार के सुशिक्षित लोंगों कि यह जिम्मेदारी है कि समय पर अपने लोगों को समझाकर उन्हें सही मार्ग पर लाना है।शहरी सभ्यता में पला हुआ यह परिवार पढा–लिखा होकर भी परंपरागत संस्कारों को आगे बढाते हुए दिखाकर उससे बाहर लाने के लिए ऐसे चरित्रों का निर्माण किया जो अपने और आसपास का अनुभव पाकर परंपराओं में परिवर्तन लाने का प्रयास मन से करते है।लेखक कहते है कि हमें परिवर्तन की चाहत मन में उतरकर करनी होगी जो सदा के लिए रहेगी और उसे आगे बढाएगी। इस उपन्यास का देशकाल तथा वातावरण शहरी सभ्यता से जुडा हैं। उपन्यास के आरंभ में ही लेखक कहते है कि,'' देश के दूसरे शहरों की तरह यह कॉलोनी भी विविधता में एकता की मिसाल लिए,छोटा सा एक ऐसा टापू है,जहॉं सब एक दूसरे के सुख दुःख में बराबर के भागीदार होते हैं।''[1] शहर में रहनेवाले लोग अलग–अलग जगहों से विस्थापित होकर आये हैं। उसमें विभिन्न धर्म जाति के लोग रहते हैं। लेखक को हिन्दी साहित्य की श्रेष्ठ कहानी 'पूस की रात' की याद आती है,जिसमें उसका नायक हल्कू ठंड के कारण कॉप रहा है और करवटें बदल रहा है। शहरी सभ्यता में रहनवाले लोग इसलिए करवटें बदलते है क्योंकि पडोस में लडका होने की खुशी में देर रात डी.जे.का कर्णकर्कश भोंपू बज रहा हैं। जिसके कारण पडोसीयोकी नींद उचट गयी है। दशरथ और भगवती का पूरा परिवार इस आवाज के कारण करवटें बदल रहा हैं।यह कानूनन अपराध होते हुए भी डर और सभ्यता के कारण वह पडोसीयों को कुछ कह नहीं पातें।अन्याय को चुपचाप सहने के वह अधीन हो जाते हैं।एक नागरिक के अधिकार को जानना बहुत जरुरी होता है मगर धनपतियों के डर के कारण और अपनी सभ्यता को बनाए रखने के कारण नागरिक के अधिकारों का यह सही उपयोग नहीं कर पाते।साथ साथ पडोसियों का दिल दुखाना उन्हें पसंद नहीं हैं।लेकिन आज के पढे लिखे लोगों ने किस तरह आचरण करना है यह संकेत भी लेखक हमें देते हैं। पुरानी गलत पपरंपराओं को हटाकर नयी परंपराओं को लाकर आज की पीढी को चेतावनी दी गयी है।

उपन्यास का कथाशिल्प

उपन्यास की कथा मार्मिक तथा कारुणिक स्थितियों को दर्शाती है।समूची कथा भावुकता के तानो बानों से निर्मित हैं। जिसमें एक प्रवाह हैं।भावनाओं का यह कथा प्रवाह बडा ही रोचक बना हैं जो पाठकों को भी अपने साथ बहाकर ले जाता हैं।कहीं भी कथा में शिथिलता दिखाई नहीं देती। वस्तुतः जहॉ भावावेग की प्रबलता होती है,वहॉ कथा का सौंदर्य निखर उठता हैं। 'शकुंतिका' उपन्यास का कथाशिल्प मात्र प्रयोग की दृष्टी से न करके उसके साथ लेखक की गहरी अनुभूतियॉ जुडी हुई स्पष्ट दिखाई देती हैं। यही कारण है कि उसमें सहजता और स्वाभाविकता पर्याप्त मात्रा में दिखाई देती है।समकालीन शहरी हो या ग्रामीण संस्कृति में लडकी के जन्म को आज भी नकारा जा रहा है।यह हमारी मानसिक दूर्बलता का दयोतक हैं। कन्या भ्रुण हत्या सभ्य समाज का वह हथियार हैं जो इन्हें सबके सामने कलंकित होने से बचाता हैं। मगर इसके दुष्परिणाम जब दिखाई देने लगे तब इसे कानूनन अपराध घोषित करना पडा।फिर भी यह घिनौने कृत्य आज भी जारी है।इसके उपर कानूनन उपाय जारी किये गये हैं। मगर यह सच है कि,कानून इस समस्या का समाधान कभी नहीं ढूँढ सकता। केवल इसका इलाज जनजागरुकता हैं।स्त्री के प्रति समाज के भीतर संवेदनाओं को जगाना हैं। जिसमें समाज में फैला हुआ अज्ञान और अंधविश्वास का अंधेरा हट सकता है। भगवानदास मोरवाल जी ने इस उपन्यास में इन्हीं बातों पर अधिक बल दिया हैं।चिकनी चुपडी बातें करके और महिला दिन मनाकर स्त्री को सम्मान नहीं मिल सकता। उसके लिए जो स्त्री ही स्त्री की दुश्मन बनी हैं उसे अपनी मानसिकता में परिवर्तन करना होगा।जो पुरुष स्त्री का सम्मान करना चाहते है वह आगे आकर समाज और परिवार में स्त्री को आदर दिलाने की कोशिश करें जो इस उपन्यास में दिखाया हैं।आज स्त्री ही स्त्री की असली दुश्मन बनी हुई है,उसमें परिवर्तन लाना जरुरी हैं।लेकिन उसके लिए लेखक ने उपन्यास के माध्यम से ऐसे दो पुरुष पात्र चित्रित किये है जिनकी भूमिका महत्वपूर्ण है।स्त्री का सम्मान तभी बढता है,जब परिवार के पुरुष उनका हौंसला बढाकर उन्हें प्रेरणा देते हैं।इस उपन्यास में परंपरागत स्त्री के रुप में भगवती का पात्र वही बात सोचता है,जो अक्सर भारतीय स्त्री सोचती है।भगवती की बहू तिसरी बार गर्भवती है,पहली दो लडकियॉ और उपर से वह तिसरी बार लडकी नही चाहती हैं। तब पडोसन दुर्गा उसे मेडिकल जॉच करके लडकी हो तो गर्भ हटाने की सलाह देती हैं,जो उसे सही लगता है मगर अब यह नहीं हो सकता यह समझने के पश्चात् जब बहू को तिसरी बार लडकी होती है तब वह उस बेटी का मन ही मन में तिरस्कार करती हैं।ऐसे अवसर पर इस घर के प्रमुख पात्र दशरथ पडोसवाले उग्रसेन के घर में उनके तीन पोते कैसी गलत हरकतें करके उन्हें परेशान कर रहे है वह बताकर अपने पत्नी के मन में पोतीयों के प्रति संवेदना को जागृत करने में सफल होते है यह दिखाया है।धीरे–धीरे भगवती की सोच में परिवर्तन होने लगता हैं।अपने घर के पोतों के गलत व्यवहार देखकर शर्म महसुस करनेवाली दुर्गा जब पडोसन भगवती की पोतियों की सफलता और सभ्य व्यवहार को देखती थी तब सोचने लगी कि लडकीयों के प्रति अपनी सोच कितनी गलत थी इसका एहसास उसे होने लगता है और वह भगवती के भाग्य की प्रशंसा करती हैं।तब अनायास भगवती की सोच में भी परिवर्तन होने लगता हैं।कन्याओं के प्रति सकारात्मक सोच और आत्मिक सहजता को जगाना यह उपन्यास का उद्देश्य सफल होता हुआ दिखाई देता हैं।

स्त्रियों की मानसिकता में परिवर्तन

दरअसल आधुनिक काल में स्त्रियों में जो परिवर्तन दिखाई देता है वह बाहरी मोर्चे पर आया परिवर्तन है। आंतरिक परिवर्तन विचारों के जरिए आहिस्ता आहिस्ता मगर स्थायी रुप में होता हैं।इसके लिए लगातार मानसिक जागृति और वैचारिक सांस्कृतिक उद्‌बोधन की आवश्यकता हैं।सिर्फ संविधान और कानून में परिवर्तन करने से हालात में परिवर्तन नहीं हो सकता।बाहरी परिवर्तन स्त्रियों को आधुनिक दिखा सकता है मगर इससे दिमागी जडता और अंधःविश्वास दूर नहीं हो सकता।'शकुंतिका' उपन्यास में ऐसे चरित्रों का निर्माण किया है जो अपनी सोच के माध्यम से परंपरागत विचारों को छेद देने का प्रयास करते हैं।नये युग की लडकियों के उपर अपने परंपरागत रुढी तथा अंधश्रद्वा का प्रभाव सहज दिखाई देता है। इसे जड से उखाडने के लिए इस उपन्यास के पुरुष पात्र दशरथ अपनी पोती गार्गी जो मेडिकल की पात्रता परीक्षा की सफलता के लिए ईश्वर की आराधना करती है त बवह उसे अपने उपर भरोसा करने की सीख देते है। अंधश्रद्वा का विरोध करते हुए अपने भीतर अपने कर्मो से आत्मविश्वास जगाने के लिए कहते हैं।अपने हक की लढाई लढते हुए ऐसे दकियानुसी विचारों से दूर होकर नये विचार अपनाने होंगें यह सीख देते है।अक्सर अनाथालय से लडका गोद लेने की प्रवृत्ति को लेखक ने खंडित करते हुए पोतों की गलत हरकतों से परेशान दुर्गा के माध्यम से भगवती की सोच में परिवर्तन करने का सफल प्रयास करते हुए भगवती का लडका ओर बहू लडकी को गोद लेने का फैसला कर सकने में कामयाब होते है।आधुनिक काल में लडकों का ध्यान अधिकतर माता–पिता की जायदाद पर अधिक रहता है। उनके भीतर स्नेह, संवेदना, आत्मीयता, जिम्मेदारी का एहसास कही दिखाई नहीं देता।इसके विपरित लडकियों के लिए प्रेम ही सवसे बडी संपत्ति होती हैं। इसलिए लेखक यह दर्शाते है कि,जहॉ आज तक लडके की खुशी के लिए कुऑ पूजन की विधियॉ की जाती है यहॉ भगवती के घर गोद में ली हुई पिहू के घर आने की खुशी में कुऑ पूजन की विधि करके परंपरा को खंडीत करने का भाव दर्शाया है।इस लडकी के बारे में दुर्गा अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए कहती है,''पता नहीं फूल सी नन्हीं जान को ऐसे कहीं भी फेंकते हुए लोगों का जरा भी दिल नहीं पसीजता है,वह कैसी मॉ होगी जो अपने जिगर के टुकडे को फेंककर चली गयी।''[2] स्त्री ने लडकी को फेंकना यह स्त्री ने स्त्री की वंचना करना हैं।मॉ की ममता की यह प्रतारणा हैं,वात्सल्य की यह उपेक्षा हैं।उसे हम जैसी स्त्रियाऍ अगर अपना रही है तो हमें आधुनिक कहना गलत होगा क्योंकि आधुनिक उसे कहां जाता है जिसकी सोच में परिवर्तन होता हैं।परंपरागत रुढी,मान्यताएं अगर गलत है तो उसमें परिवर्तन लाने का साहस करना होगा यह कहते हुए दशरथ कहते हैं कि,''बात रीत की नहीं,बात आदमी की खुशी की है।वैसे यह रीति –रिवाज कोई आसमान से उतरकर आए नहीं हैं।इंसान ने अपने खुशी के लिए बनाए है।''3इस वाक्य में यथार्थ सोच व्यक्त होती हैं।वैसे परंपराओं की जडे मजबूत होती है,उन्हें उखाडकर फेंक देना आसान नहीं होता।लेकिन मन की चाहत और समाज का संगठन इसे दूर करके नई सभ्यता का विकास कर सकते है यह विश्वास दिलाया हैं।

स्त्री अस्मिता की पहचान

स्त्री अस्मिता की पहचान उसकी आत्मनिर्भरता पर निर्भर होती है।इस उपन्यास में आधुनिक काल की लडकियॉ अपने ज्ञान के माध्यम से अपना अस्तित्व निर्माण करने में कामयाब होती हैं।घर की लडकियॉ सरकारी स्कूल में जाकर सिया का वकील बनना,गार्गी का डॉक्टर बनना,पिहू का परदेश जाना यह उनकी अपनी गुणवत्ता का परिणाम हैं। यह स्त्री की अस्मिता की पहचान हैं।जब स्त्री आर्थिक तथा शैक्षणिक रुप में सबल हो जाती है त बवह अपने जीवन के निर्णय लेने में सफल हो जाती हैं। परंपरा से स्त्रियाऍ आर्थिक दृष्टी से पुरुषों पर निर्भर रहती थी और उन्हें हर बात उनकी माननी पडती थी।इस उपन्यास में भगवती की पोतियॉ उच्चशिक्षा विभूषित होने के कारण वह अपना जीवन साथी चूनने का फैसला लेने में समर्थ दिखाई देती है।अनमेल विवाह यह आज भी एक बडी समस्या हैं। इसके उपर उपाय बताते हुए लेखक उग्रसेन के माध्यम से दशरथ को समझाते हुए कहते है –''दश्रथ तू भी कैसी बच्ची जैसे बातें कर रहा हैं।अरे,यह सब कहने की बात है। बिरादरीवाले रिश्ते की क्या गारंटी है कि वहॉ सिया खुश और सुखी रहेगी? ये नये जमाने के बच्चे है, अगर इसने कोई फैसला लिया है तो कुछ अच्छा बुरा समझ कर लिया होगा।'' [4] इस वाक्य स`लेखक समाज के मन से धर्मभेद, जातिभेद हटाकर मानवतावादी भाव प्रेरित करना चाहते हैं।दोनों लडकियों की शादी बिरादरी के बाहर हो जाना यह आधुनिकतावाद सहज अपनाना समाज के लिए प्रेरणादायी हैं। भाव अपनाया गया हैं।लेकिन भगवती के परंपरावादी विचार आसानी से छुटते नहीं हैं। वह अपनी तिसरी पोती बुलबुल की शादी बिरादरी में करने का फैसला लेती है।लेकिन यही बिरादरीवाले लोग दहेज के लालच में जब उसे परेशान करते हें तब भगवती के परंपरागत विचारों में छेद हो जाता हैं। सिया अपनी वकीली के अधिकार से जब उन्हें नोटीस भेजती है तब उनका दिमाग ठिकाने आ जाता हैं। आज इन विचारों की जरुरत महसुस हो रही है।आजकल के लडके धन के बल पर आवारा बनते जा रहे है।उन्हें अपने मॉ–पिताजी के प्रति स्नेह नहीं है मगर उनकी जायदाद पर अधिकार की बात जरुर करते हैं। उग्रसेन को दो बच्चे और चार पोते होने के बावजूद बुढापे की अवस्था में अकेलेपन को अपनाने पर मजबूर हो जाते हैं।पडोसवाली लडकियॉ स्नेह से उनकी देखभाल करती हैं।लेखक हमें संकेत देना चाहते हैं कि, हमें लडका–लडकी यह भेद न करते हुए सबको समान मानकर व्यवहार करना सीखना होगा।

उपन्यास का कमजोर पक्ष

उपन्यास की कथा में संघर्ष कही दिखाया नहीं गया है।वैसे बिना संघर्ष का कोई परिवर्तन संभव नहीं है।इस उपन्यास में वर्णित सिया, गार्गी,पिहू इन्हें समाज के साथ हर पल संघर्ष करना पडा होगा लेकिन उसका जिक्र कहीं दिखाई नहीं देता। कहानी बीच में आकर सपाट भाव को अपनाती हैं। लेखक आरंभ में कहानी की रोचकता को बढाते हैं वह मध्य में आकर सपाट हो जाती हैं।सिया के मन का संघर्ष भोंपू के आवाज को बंद करने तक ही सीमित रह जाता हैं।उसके बाद उसके जीवन में कहीं कुछ बनता या बिगडता दर्शाया नहीं गया।गार्गी की मनोदशा का चित्रण भी कही नहीं हैं। पियू के जीवन की उथल पुतल के बारे में भी मौन धारण किया गया हैं।आज की युवा नारीयॉ यह सबकुछ चुपचाप सह नहीं सकती उनके भीतरी संघर्ष को बाहर लाने में लेखक कमजोर पडते हुए दिखाई देते हैं।शायद लेखक पुरुष होने के कारण स्त्री की अंतरात्मा में पहुंचने में सफल नहीं हो पाये।जो असल में भोगता है वही उसे महसुस कर सकता हैं और वही उसे व्यक्त कर सकता हैं।कहानी की घटनाओं का भाव दर्शाते हुए कही भी कोई पात्र आक्रमक नहीं होता यह असली जीवन में संभव नहीं।फिर भी उपन्यास में ऐसे किसी भाव का चित्रण नहीं दिखाई देता।यह लेखक का अपना दृष्टीकोन हो सकता हैं।

समीक्षा

उपन्यास की कथा मार्मिक तथा कारुणिक स्थितियों को दर्शाता हैं।समूची कथा भावुकता के तानो बानों से निर्मित हैं।जिसमें एक प्रवाह हैं। भावनाओं का यह प्रवाह कथा को आकर्षक बनाता ही है, पाठकों को भी अपने साथ बहाकर ले जाता है।वस्तुतः जहॉ भावावेग की प्रबलता होती है वहॉ कथा का सौंदर्य भी निखर उठता हैं। 'शकुंतिका' उपन्यास का कथाशिल्प मात्र प्रयोग की दृष्टी से न करके उसके साथ लेखक की गहरी अनुभूतियॉ जुडी हुई दिखाई देती हैं।यही कारण है कि उसमें सहजता और स्वाभाविकता पर्याप्त मात्रा में स्पष्ट होती हैं।समकालीन

शहरी हो या ग्रामीण संस्कृति में लडकी के जन्म को आज भी नकारा जा रहा हैं। यह हमारी मानसिक दूर्बलता दयोतक हैं।कन्या भ्रुण हत्या सभ्य समाज का वह हथियार है जो इन्हें सबके सामने कलंकित होने से बचाता है। मगर इसके दुष्परिणाम जब दिखाई देने लगे तब इसे कानूनन अपराध घोषित करना पडा। फिर भी यह घिनौने कृत्य आज भी जारी हैं। क्योंकि कानून इस समस्या का समाधान कभी ढूँढ नहीं सकता,केवल उसका इलाज जन जागरुकता है और स्त्री के प्रति संवेदनाओं को जगाना है। जिसमें समाज में फैला हुआ अज्ञान तथा अंधःश्रद्वा का अंधेरा हटाया जा सकता है।लेखक संकेत देते है कि,चिकनी चुपडी बातें करके स्त्री को सम्मान नहीं मिल सकता। उसके लिए स्त्री जो आज स्त्री की दुश्मन बनी हैउसमें परिवर्तन लाना बहुत जरुरी हैं। लेकिन उसके लिए इस उपन्यास के प्रमुख पुरुष पात्र दशरथ और उग्रसेन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। स्त्री का सम्मान तभी बढता है जब परिवार के सदस्य हमेशा उनका साथ देते है और जरुरत पडने पर उन्हें डाटते भी हैं।दस उपन्यास में ऐसी अनेक घटनाएँ दिखाई देती हैं। जिसमें परंपरागत स्त्री भगवती आनेवाली कन्या की भ्रुण हत्या की बात सोचती हैं।लेकिन सही समय पर उन्हें अच्छे विचार मिलने पर विचारों में परिवर्तन आ सकता हैं।यह उपन्यास की विशेष मौलिकता हैं।सही समय पर लडकियों को परिवार की तरफ से मार्गदर्शन मिलेगा तब वह आसमान को छूने लगती हैं।सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, उनके भीतर आत्मविश्वास जागेगा और बाहरी संघर्ष को आसानी से वह मात कर सकती हैं।अपनी कसौटी पर खरी उतर सकती हैं।आज लडकियॉ अपनी गुणवत्ता के आधारपर कुल का नाम रोशन करती हैं।यही महत्वपूर्ण चेतावनी लेखक समाज को देना चाहते हैं।यही इस उपन्यास की श्रेष्ठता हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शकुंतिका –भगवानदास मोरवाल–राजकमल प्रकाशन 2020
2. हिंदू महिलांओं के जीवन में धर्म का महत्व –डॉ. प्रीति मिश्रा 2009
3. महिला सशक्तिकरण और कानून–डॉ ए. एन. अग्निहोत्री 2008
4. भारतीय महिला एवं आधुनिकीकरण –'आरजू'